प्रेम पत्री

Wednesday, May 6, 2020

🌹श्री परमहंस महाराज श्री जुगलदासजी महाराज की प्रेम पत्री🌹

. ❤️ प्रेम पत्री ❤️

|| श्री राज श्री श्यामा महारानी की जय ||

श्री सूरत सोहागिन को और दुल्हिन आशिक को (ब्रह्म श्रुष्टि को), हादी माशूक की तरफ से प्रेम उपाय की जुगत, तरकीब रोशन हो रही है।

श्री श्री श्री सूरत महारानी को, अलमस्त दीवानी को, आशिक मस्तानी को (ब्रह्म श्रुष्टि को), हादी माशूक की तरफ से प्यार के कुछ संदेशे समाचार प्रेम उपाय को रोशन (प्रकशित, जाहेर) कर रहे है...

कि हो दुल्हिन दिवानी, हो सूरत महारानी (ब्रह्म श्रुष्टि) हम तुमसे चार वेद और चार कतेब और जितनी ब्रह्मांड में चौदे भवन में ग्रंथ किताबें है उसका मगज सार (गुज़ मायना) कहते है...

सो तुम आतम रूह के श्रवण (दिल के कानों से) सुनियो...

और जो तुम इसी वजूद से (तन से) माशूक अक्षरातीत से मिलना चाहते हो और इसी वजूद में अकह अक्षरातीत के सुख चाहते हो तो मेरे इन हरफों के ऊपर (9 हरफ के ऊपर) तुम अमल करना (चल कर दिखाना)...

(अकह याने आजतक जिनके बारे में कुछ भी किसी ने कहा न हो)

री हो सोहागिन! इन हरफों पर अमल करने के बाद जो तुमको इसी वजूद में अकह अगम आनंद न पैदा हो (न आए) तो उसके हम हम ज़मानतदार (जिम्मेदार) है...

(अगम आनंद याने जिस आनंद की आज तक किसी को गम, खबर नहीं थी वह अखंड आनंद)

और इसी वजूद से, इसी तन से जहां मरने के बाद , तन छूटने के बाद पहुंचते है वहां उस परमधाम में जो तुम जीवते याने इसी तन में रहकर भी न पहुंचे तो उसके हम ज़मानतदार है (जिम्मेदार है)...

और इसी वजूद में बिना पढ़े और बिना सुने और बिना किसी की सोहोबत करे और बिना कष्ट - मेहनत करे थोड़े ही समय में जो तुम्हें ब्रह्मांड का ज्ञान न खुल जाए और अगम निगम की सुध, जानकारी न हो और जो काम लाख बरस की मेहनत से भी नहीं होता तो वही काम तुम्हारा बिना ही मेहनत किए सरलता से हो जाएगा उसके हम ज़मानतदार है (जिम्मेदार है)...

और इसी तन में तुम खासल खास मोमिन न हो जाओ उसके हम ज़मानतदार है |

परंतु तुम बिना डरे (निर्भय) बेशक होकर दुनियां जो भला बुरा (सही गलत) जो भी कुछ कहता है उससे तुम्हारे कान बंद कर के (ध्यान में न लेके)...

दुनियां के ऐशो आराम, रंगत तमाशे (मनोरंजन) देखने के बजाए उस और से तुम्हारी आंखें बंद कर के...

और माशूक पिया की दोस्ती के सिवाय और किसी की भी दोस्ती दिल से निकालकर (धोकर) इन नौ हरफों के ऊपर अमल करो, चलो तब तुम इस मंजिल तक पोहोंचोगी |

और जो कुछ हमने तुमको कहा लिखा है उसे तुम अपनी आतम से विचार के देखो तब ही इन वचनों की लज्जत पाओगी |

तो अब वह हरफ तुमसे कह रहे है उसे तुम अपनी आतम रूह की पाटी पर (दिल पर) लिख लेना |

और उन हरफों को रात दिन चौसठ घड़ी एक पल के लिए भी मत भूलना |

क्योंकि य़ह हरफ नहीं है यह तो पूर्णब्रह्म को मिलने का दरवाजा है...

और तन मन जीव का, आतम का आब हैयाती (अखंड रस) है, जीवन का मूल है...

सो वह हरफ यह है | 👇

. ❤️ पहिला हरफ ❤️

तो पहिला हरफ यह है कि, हे अक्षरातीत की दुल्हिन..! तुम जो इस माया में किसी की मां, किसी की पत्नि, किसी की बहू और किसी की बेटी बनी फिरती हो तो यह निश्चय कर लो कि यह तुम्हारा भ्रम है |

तुम ना किसी की बहू हो और ना किसी की बिटिया हो और ना किसी की मां हो और ना किसी की पत्नि हो |

तुम अक्षरातीत भरतार की आशिक दुल्हिन हो |

तुम उनके जीव की जीवन हो, प्राण प्यारी हो...

अलबेली (अनोखी, सुंदर) अनियारी हो और रूप गुण में प्रेम गर्भा (प्रेम से भरपूर) हो...

और लाडली मानवंती हो |

सो तुम्हारे प्रीतम ने तुम्हारे प्रेम इश्क की आजमाइश के कारण (परीक्षा लेने के कारण) तुम्हें इस स्वप्न के खेल में तुम्हारी असल को तुमसे भुलाया है...

और सूपने में सूपने के तन के सनमंधी से मिलाया है और उनसे तुम अपनापन बांध रही हो याने उन्हें तुम अपना समज रही हो |

सो हो दुल्हिन..! तुमने निज धाम में दूल्हे माशूक से हठ-जिद करके प्रेम इश्क की होड़ बांधी थी (इश्क रब्द किया था)...

कि आप हमे जैसी चाहे ऐसी माया दिखाओ और एक बार नहीं सौ बार आज़मा लो परंतु हम आपको किसी भी हालत में नहीं भूलेंगी |

तब दूल्हे माशूक ने कहा कि जब तुम निश्चित ही माया में भूल जाओगी तब तब मैं तुम्हारे कारण उस माया सूपने में तुम्हारे जैसा ही तन धारण करके आऊंगा...

और अपना वर्ण भेष बदल के (मूल स्वरूप बदल के) मनुष्य तन के पर्दे में तुम्हारे पास आऊंगा | (मनुष्य तन धारण करूंगा)

तब तुम मुझको जरा भी नहीं भूलना और जाग्रत की निसबत सपने में भी निभाना...

और मैं तुमको इन सपने की आंख से मेरा निज रूप और निज घर वहां दिखाऊंगा...

और जो कुछ मेरी तुम्हारी जाग्रत की वितक बात है (अर्श की बातें) और रंगभवन और रंग सेज (सेज्या सुख) की जो हकीकत है उसे सूपने में तुम्हें सब कहूंगा |

तब मेरे शब्द (वचन, वाणी) पेहेचान लेना और उसी वाणी में मुजे पेहेचान लेना (देख लेना)...

क्योंकि स्त्री अपने पति की बोली को, चाल को (ईशारों को) अच्छी तरह से पेहेचानती है |

इसलिये जो तुम मेरी दुल्हिन हो तो मेरी आवाज़ को (वाणी को) पेहेचान लेना...

और पेहेचान के मेरे संग हो जाना |

तो हे सोहागिन..! यह बातें तुम्हारे माशूक ने तुम्हें निजधाम में कह दी थी तो अभी भी वही समय चल रहा है | (सोई पल सोई घड़ी)

अर्श में तुमसे कहा थी कि तुम माया में जाकर सब भूल जाओगी तो उसे तुम रोम रोम में (पूर्णतया) भूल गई हो...

और मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारे कारण तुम्हारे जैसा ही स्वरूप धरकर तुम्हारे पास आऊंगा |

और सपने में तुमसे जाग्रत की बातें (खिलवत की बातें) कहूंगा |

सो हे सोहागिन..! तुम्हारे प्रीतम माशूक ने जिस प्रकार से कहा था उसी प्रकार से आए है...

और भेष बदल के मनुष्य का मुकना (पर्दा करके) आए है...

और रंग भवन की (रंग महल की) और रंग सेज की (सेज के सुख की) हकीकत कहते है...

सो यही सतगुरु है और यही काशिद गुमास्ता नायब (रसूल, सेवक, प्रतिनिधित्व करने वाला) है...

और यही साक्षात हक हादी धाम के धणी है...

और यही लिलावन मिलावन हारे है और यही पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत है...

और श्री धाम के मिलने का दरवाजा है...

और यही जाहेर में आशिक है और साक्षात पूर्ण ब्रह्म माशूक है |

सो हे सोहागिन..! तुम सूपने की द्रष्टि छोड़ के और सूपने की जात पात नतैती (रीति रिवाज) छोड़ के दावा नव किशोरी (ब्रह्म श्रुष्टि) का लो |

और खुद को अष्ट प्रहर चौसठ घड़ी अक्षरातीत की दुल्हिन जानना और रात दिन अपने साहेब पूर्ण ब्रह्म दूल्हा की दुल्हिन मानना |

रोम रोम में निश्चय करके बेशक बेसूभे होकर अपनी संगी खासल खास रूहे, रूह मोमिन का ध्यान रखना...

और रोम रोम में निश्चय करके, तन मन जीव अहम से और अष्ट प्रहर चौसठ घड़ी दुल्हिन (ब्रह्म श्रुष्टि) का दावा लेना |

क्योंकि तुम्हारे कारण तुम्हारे माशूक दुल्हा निजधाम से आए है और ऊपर दरवाजे के ऊपर खड़े है |

(जैसे एक दूल्हा जब ब्याह करने के लिए जाता है.. अपनी दुलहिन को लेने के लिए जाता है। तो वह दरवाजे पर आकर खड़ा रह जाता है। और दुलहिन से विवाह करके फिर उसे लेकर जाता है।

याने के धनी दूल्हा मुझ दुलहिन को दरवाजे पर लेने के लिए आकर खड़े रहे है।
यहाँ उदाहरण देकर कह रहे है।)

इसलिए तुम निश्चय करके (ईमान के साथ) अपनी आतम से दुल्हिन का दावा लो...

क्योंकि दुल्हिन का दावा लिए बिना तुम किसी भी तरह निजधाम में नहीं पहोंचोगी...

और किसी भी तरह इश्क (राजजी) तुम्हें अपना मुख नहीं दिखलाएंगे (दीदार नहीं कराएंगे)

और किसी भी तरह दावा दुल्हिन का लिए बिना माशूक तुम्हें मुख नहीं दिखलाएगा

और अनंत सुखों के सागर जो माशूक दूल्हा तुम दुल्हिन के लिए यहां लेकर आए है उसे बिना दुल्हिन का दावा लिए तुम उन सागरों से एक बूंद भी नहीं ले पाओगी...

और बिना दुल्हिन का दावा लिए तुम अनंत गुज़ न्यामतों से गुज़ विचारों की कुछ लज्जत नहीं पाओगी |

(याने बिना दुल्हिन का दावा लिए हम उन अनंत गुज़ न्यामतों, राजजी के दिल के अनंत सागरों पर गुज़ विचार करेंगे तो भी हमे उन गुज़ न्यामतों की लज्जत नहीं मिलेगी

उन न्यामतों में छिपे इश्क की लज्जत नहीं मिलेगी)

इसलिए जल्द ही बिना देरी किए जरूर से जरूर दुल्हिन का दावा लो |

इसलिए कि आदि अनादि वह शाही मार्ग है जहां जिसने भी जिसके भेष का दावा लिया वही तुरन्त ही जिसके भेष का दावा लिया है उसका जोश आवेश उसमें (जिसने दावा लिया है उसमें) प्रकट हो जाता है |

(याने आदि दुनिया से अनादि परमधाम जाने का हमारा मार्ग शाही मार्ग है जिसमें हम दुल्हिन का दावा लेते है तो दुल्हिन का जोश आवेश हममे आ जाएगा)

और जैसे ही हमने दावा लिया तुरंत ही वह दावेदार का रूप होकर उसी के सर्व कर्म धर्म बरतने लगेंगे |

(याने दुल्हिन का दावा लेने के बाद हमारे कोल फेल हाल उस दुल्हिन की तरह हो जाएंगे)

जैसे दो लडके थे |

रहश्य के खेल में एक ने श्री कृष्ण का रूप बनाया और एक ने राधिका दुल्हिन का रूप बनाया |

जैसे ही दोनों ने मन वचन और कर्म से अपने अपने भेष का दावा लिया तुरंत ही दोनों में दूल्हा दुल्हिन का जोश आवेश प्रकट हो गया...

और साक्षात श्री कृष्ण राधिका के जैसे ही लीला करने लगे (चैन चरित्र बरतने लगे) और वैसे ही वह श्री कृष्ण राधिका हो गए |

और उस रहश्य के खेल में जैसे ही श्री कृष्ण अंतर्ध्यान लीला हुई तब तुरंत ही जिस लडके ने राधिका का भेष लिया था उसके वास्तव में प्राण छूट गए |

आशिक माशूक का बिछोहा सहन नहीं कर सकता |

(यहां इस खेल में आशिक राधिका थी और माशूक कृष्ण थे | आशिक राधिका का भेष लिए लड़के को माशूक कृष्ण नहीं दिखे तो खेल में वास्तव में राधिका का भेष लिए लड़के का प्राण छूट गया)

नरसिंह लीला के खेल में जिसने पुत्र का भेष लिया था उसने सच में ही उसके पिता का भेष लिए लड़के का पेट ही फाड़ दिया |

सो भी स्वरूप धरे को जोग पाय के याने जो जैसा स्वरूप धरता है, दावा लेता है वह उसी का जोग पाता है |

और एक कलाकार ने अपने पेट पालने के कारण बादशाह के आगे संत का भेष लिया |

जैसे उस कलाकार ने संत के भेष का दावा लिया उस कलाकार में संत का प्रतिबिंब पड़ा |

और जैसे ही बादशाह ने प्रसन्न होकर एक लाख की मुंदरी (अंगुठी) दी तो वह नकली संत ने उसे लात मारी और जंगल में चला गया |

और एक कलाकार ने राजा का भेष लिया और उसके पिता का सिर ही उड़ा दिया |

सो हे सोहागिन..! ऐसे तो अनंत दृष्टान्त है |

इसलिये दावा दुल्हिन का, आशिक माशूक का, मन वचन कर्म से लेना चाहिए |

जिससे तुम्हारे अनंत कोटि कारज और अनंत कोटि मनोरथ सिद्ध होंगे, पूर्ण होंगे |

हो सुरति सोहागिन...! यह पहिला हरफ हुआ |

. ❤️ दूसरा हरफ ❤️

अब दूसरा हरफ यह है कि जो स्वरूप हमारी सूरता को जगाने वाला है और उसे अर्श में पहुंचाने वाला है तो उस स्वरूप से हमे इश्क लगन लगानी चाहिए |

जैसे 10 साल का सुंदर कमल नैनों वाला राजकुमार है और अति सुंदर कमल नैनी नव जोबन कामिनी (स्त्री) है...

दोनों को एकदूसरे से मीन पपीहा जैसी लगन (प्रीत) लगी है...

और ऐसी चढ़ती लगन में एक समय दोनों का एकांत में मिलाप हो गया और फिरसे मिलने के लिए उनका वायदा कोल करार हो गया |

इस दरम्यान में दोनों के परिवार और गुरुजन दुरजन को इनके प्रेम की ख़बर हो गई...

और सभी लोग इनके बारें में विचार करने लग गए...

और दोनों के घर वाले उनका चौकी बंदोबस्त करने लगे याने उन पर नज़र रखने लगे कि दोनों एक दूसरे से ना मिले...

इसतरह दोनों का मिलन होने के बाद बिछड़न हो गया |

जैसे आकाश में बारिश आने से पहले घटा उमड़ती है वैसे दोनों के दिलों में एक दूसरे को मिलने के लिए तड़प पैदा हो रही है...

अब दोनों के आकाश रूपी दिल में रात दिन चौसठ घड़ी एक दूसरे को मिलने की घटा उमड रही है (तड़प पैदा हो रही है)...

और पल पल क्षण क्षण विरह रूपी बारिश की बूंदे बरस रही है...

और रात दिन वह दोनों मिलाप की बातें और मौका ढूंढा करते है...

दोनों एक दूसरे से मिलने के लिए अंदरोअंदर तलफते है, तड़पते है, तरसते है और दुखी हो रहे है...

और जो कोई उनके मिलाप की तरकीब बताए तो उसके ऊपर वह तन मन धन कुर्बान करती है |

तो हे सुहागिन..! जैसी उस मजाजी झूठी आशिक की वृत्ति, चाहना झूठे माशूक से लगी है ऐसी ही तुम्हें हकीकी सच्ची आशिकी अपने सच्चे माशूक से लगानी चाहिए, करनी चाहिए |

और दूसरा दृष्टान्त, जैसे एक राजाराणी को पूरी जिंदगी पुत्र की चाहना में तरसते तरसते वृद्धापन में उनके वहां एक कुंवर का जन्म हुआ ...

अब वह कुंवर उनके लिए प्राणों का प्राण है और प्राणों से भी अधिक प्यारा है...

वह कुंवर दोनों की पलके है और उनके नैनों का तारा है और उनका सुंदर लाडला है...

उस कुंवर की अनहोनी बात भी उनके लिए होनी है...

कुंवर की उल्टी बात या कार्य उनके लिए सीधा है...

कुंवर से मिलने वाला दुख भी उनके लिए सुख है...

कुंवर की गालियां भी उनको अमृत से भी मीठी लगती है...

उसका रिसाना भी उनके लिए प्रेम है, उनके सुख का मूल है याने उसमें उनको सुख मिलता है...

उसकी चुप्पी भी (मौन भी) उनके लिए प्रेम रस की बेकरारी का मूल है...

याने वह उनसे बातें न करे तो वह बेकरार हो जाते है...

उसकी सभी गति मति चाल और उसका दिया हुआ दुख भी दोनों की आंखों में प्रेम रस को और बढ़ाता है |

हे सुहागिन...! तुम्हें हादी माशूक से ऐसा लाड करना चाहिए जैसा वह जूठा जीव जूठ से करता है...

ऐसा लाड तुम्हें सच्चे माशूक से करना चाहिए |

. ❤️ तीसरा हरफ ❤️

और तीसरे हठ टेक किया चाहिए

याने तीसरा हरफ यह है कि हमे अपने माशूक को हठ जिद से पकडे रखना चाहिए, पाना चाहिए...

जैसे...,

जो भला (अच्छा) है तो अपना माशूक बुरा है तो भी अपना माशूक...

और ना बड़े से काम और न छोटे से...

बड़ा काम है तो भी अपना माशूक और छोटा है तो भी अपना माशूक...

(कहने का तात्पर्य यह है कि इसमें जो कोई भी काम है उसमें सबसे अहम भूमिका माशूक़ की रहनी चाहिए यह कहा गया है।

काम कोई भी हो उसमें बड़ा और छोटा हर जगह माशूक़ ही है और होना चाहिए।)

तो अपने माशूक को पतिव्रता की तरह हठ जिद से पकडे रखना है...

जैसे मरकट मूठ को पकड़े रखता है वैसे ही अपने माशूक को पकडे रखना है...

याने बंदर अपनी मुट्ठी में हठ जिद से कुछ पकडता है तो उसकी मूठ से छुड़ा नहीं सकते...

(वैसे ही हमे अपने माशूक को पकडे रखना है...)

और जैसे हारिल (एक पक्षी) अपनी चुंगल में लकड़ी (तिनका) पकडे रखता है जिसे उससे कोई भी छुड़ा नहीं सकता...

(ऐसे ही हठ जिद से हमे अपने माशूक को पकडे रखना है)

उसी प्रकार सुहागिन की हद, कमाल और पूर्णता अपने माशूक खुदा से वहां तक है कि खुदा अलग रूप धर के उसके पास आए तो वह खुदा से ही सवाल जवाब करे...

कि जिस रूप में तुमने मुजे जाग्रत किया है और अकल दीदार दिया है उसी रूप में आओ तो तुमसे दोस्ती मिलाप करूंगी |

इसप्रकार से उस सूरत के सिवाय, इस जिमी में जो खुदा ही आवे तो वह खुदा से किनारा पकड़ती है, याने खुदा से ही दूर हो जाती है...

याने सुहागिन की ऐसी जिद है कि जिस सूरत से उसने खुदा से प्रीत की है उसी सूरत में खुदा आए तो ही उनसे दोस्ती मिलाप करती है...

ऐसा ही पूर्ण भरपूर जिद्दी आशिक होता है |

जैसे मजनू खुदा से कहता है कि तूं मुजे अपना आशिक बनाना चाहता है तो तूं लैला क्यूं न हुआ, बना |

जैसे शशी अपनी मां से कहती थी कि अरी ओ मेरी दिवानी मां तूं मुजे पुन्नू के बदले शाह और शहंशाह के साथ घर बसाने को कह रही हो |

मैंने तो अपने पुन्नू माशूक पर तो रब्ब को भी निछावर किया है |

सिवाय पुन्नू के मुजको रब्ब से भी काम नहीं |

और जैसे बिहारिनदास हरि को कहते है कि हरिदास की सूरत बिना मैं आपसे मिलाप नहीं कर सकता...

हो श्री कृष्ण प्यारे मेरे, जो तूं मुजे मिलना चाहता है तो हरिदास के रूप में घर में आओ |

इसी प्रकार एक पतिव्रता स्त्री की रीत है कि वह अपने पति के सिवा और किसी को नहीं देखती...

उसकी जिद देखकर भगवान खुद उसके पास चलकर आए...

और उस पतिव्रता स्त्री से मिले...

तब वह पतिव्रता स्त्री उल्टी खड़ी हो गई और भगवान से बोली कि जो तुम मुजे गले लगाकर भेटना चाहते हो तो मेरे उसी पति के रूप में आओ तो ही मैं तुमको मेरे अंग को छूने दूंगी |

सो हे सुहागिन...! अपने माशूक की ऐसी जिद पकड़नी चाहिए तब वह माशूक तुम्हारे बस में होगा...

और इसी जिद से माशूक तेरे स्वाधीन (वश) हो जाएगा |

इसलिए हे सुहागिन...! माया के सभी सुखों को छोड़ना परंतु माशूक हक की जिद न छोड़ना |

जिनको भी माशूक मिला है उसको जिद से मिला होएगा और जिनको आगे मिलेगा बिना एक जिद से न मिलता है, न आगे मिलेगा |

. ❤️ चौथा हरफ ❤️

और चौथा हरफ यह है कि जाग्रत की निसबत बेशक हो के सूपने में निभाना |

जो राजजी की सेवा हम जाग्रत में रंगभवन के अंदर अष्ट प्रहर चौसठ घड़ी करती थी वह संपूर्ण सेवा साक्षात और ध्यान द्वारा करके सूपने भी निभानी चाहिए |

प्रात:काल में ध्यान द्वारा राजजी को वस्तर भूखन मेवा मिठाई भोग विलास खान पान कराए बिना, ध्यान द्वारा अरूगाये बिना कभी भी स्वयं भोजन पकवान फल फूल ग्रहण न करें |

जैसे एक कामिनी और चंद्र वदन मृग लोचनी एक सुंदरवर राजकुंवर की ऐसी आशिक है कि उसकी एक पल भर की जुदाई नहीं सह सकती है |

उसके पति माशूक का दर्शन, दीदार ही उसके जीव के जीवन प्राण आधार है |

और तन मन जीव से अपने माशूक से एक रोम की भी जुदागी नहीं रखती है...

और अपने माशूक को देखे बिना बेकरार रहती है...

इसी दरम्यान प्रतिष्ठा का योग पाकर अपने पति माशूक से जुदा होकर मायके (पीहर) में जाना पड़ा |

और वहां दिन रात माशूक के विरह में मग्न रहती है...

और दिन रात घर वालों से, सगे सनमंधियों से छिपकर अंदरोअदर रोती रहती है |

बिन पानी मछली के जैसी तड़पती रहती है |

और अपने माशूक की जो कुछ सेवा वह साक्षात करती थी वह सेवा परोक्ष दिल में करती है |

इसी दरम्यान अपनी दुल्हिन के कारण उसका माशूक पति अधीर, बेकरार होकर अपना राज भेष बदल के दुल्हिन के पिता के घर नौकर बनकर आया |

इसी दरम्यान, एक समय तक पाकर अपनी दुल्हिन को एकांत में मिलकर अपना असल स्वरूप दिखाया और अपने घर की बातें कहकर पूर्ण पेहेचान करा दी...

और फिर उसे गले लगाकर अधूरों का रस लेते हुए बिना किसी भेद के निरंतर प्रेम करने लगे |

फिर खिदमतगार नौकर के भेष को पेहेचान लिया |

और फिरसे वह नौकर का भेष पहनकर पहले जैसे खिदमत, सेवा करने लगा |

अब इस भेद को, रहश्य को दुल्हिन के सिवाय कोई नहीं जानता है |

सब कुटुंब परिवार की नज़र में वह खिदमतगार है, नौकर है लेकिन एक उस दुल्हिन की नज़र में उसका निज भरतार, प्रियतम है और प्राणपति, प्राण आधार है |

अब वह जो दुल्हिन है वह क्षण क्षण पल पल बेहद सुख लेती है और एक नज़र में अपने सारे सुख बादशाह, प्रियतम पर निछावर करती है

और क्षण क्षण पल पल प्रेम रस में डूब डूब के अपने प्रियतम की गत मत छबी सूरत को स्नेह रस भरे नैनों से निहारती है...

और बार बार अंदर बाहर से मुस्कराती है...

और दोनों आपस में मुख से नहीं बोलते है, बातें नहीं करते है लेकिन मन ही मन में, दिल ही दिल में सभी सुख लेते है...

और दिल ही दिल में सैन इशारतें रमूजें (प्यार की बातें) हो जाती है...

और दिल ही दिल में सभी प्रकार की तृप्ति हो जाती है।

अब हो सुहागिन...! जैसा मैंने तुमको यह द्रष्टांत दिया है ऐसी ही गति, हरकत तुमको अपने हकीकी माशूक से करनी चाहिए...

और जाग्रत निसबत सूपने में निभानी चाहिए।

. ❤️ पांचमा हरफ ❤️

और पांचमा हरफ वह है कि हुक्म माफक, मरजी माफक और नज़र माफक बरतना चाहिए।

देह, घर, राजपाट, सुख-संपत्ति जाए लेकिन अपने प्यारे माशूक का हुक्म न जाए।

पूरा ब्रह्मांड जूठा है और एक अपना माशूक सत्य है।

अपने माशूक का जूठ सत्य है और पूरे ब्रह्मांड का सत्य जूठ है।

अपने माशूक की अनहोनी पूरे ब्रह्मांड की होनियों का सार है।

सो हे सुहागिन...! जो आम खालक (जीव श्रृष्टि) है वो शैतान की उत्पत्ति है...

उस जीव श्रृष्टि की भीस्त दोजख सात पाताल और सात आकाश के नीचे ऊपर है...

और आशिक दुल्हिन की दोजख भीस्त माशूक की केहेर नज़र और मेहेर नज़र है।

जो माशूक की रंचक नजर (थोड़ी सी, ज़रा सी नज़र) आशिक पर से फिर जाए, हट जाए तो आशिक की असली दोजख यही है...

(माशूक की जरा सी नज़र आशिक पर से हटना ही केहेर नज़र है)

और जो माशूक की मेहेर नज़र भरपूर है तो आशिक की यही पूर्ण भीस्त है।

(माशूक की पूर्ण नज़र आशिक पर ही रहे वह मेहेर नज़र है)

इस भीस्त के सिवाय आशिक जीव श्रृष्टि की भीस्त पर जूता मारता है...

और जैसे अज्ञानी प्राणी मरने से डरता है वैसे ही आशिक हकीकी (सच्चे) माशूक की केहेर नज़र से डरता है |

क्योंकि वेद कतेब में हादी माशूक का जो दिल है उसे अरस करके लिखा है...

और किबला हकीकी कहके लिखा है |

(किबला याने हादी माशूक का दिल जो हकीकी है, सत्य है..

याने हादी माशूक के दिल को सत्य कहके लिखा गया है)

तो हे सुहागिन...! अब इसका मगज मायना (बातूनी मायना) समजो कि जिसको हादी माशूक ने डार दिया है (दिल से निकाल दिया है) याने वो अरसअजीम निजधाम से गिर गया |

फिर वह अनंत कोटि उपाय से भी निजधाम में नहीं पहुंचता है...

और जिसको हादी माशूक ने अपने अरस दिल पर चढ़ा लिया है वह अनंत कोटि गुनाह करके इस जिमी में रह नहीं सकता है...

वह किसी भी तरह निजधाम पहुंचेगा |

इसलिए हे सुहागिन...! करोडों उपाय से अपने हादी माशूक के दिल पर चढ़ना चाहिए |

यह लाख बातों का एक मुद्दा (आशय, मतलब) है...

और जो होनी अनहोनी होती है, जोग अजोग होता है सब हुक्म से ही होता है उसे उत्तम से उत्तम जान पेहेचान के बड़े ही उछरंग में उसे अपना अहो भाग्य मानकर तुरंत ही उसे स्विकार, कबूल करना |

हे सुहागिन...! अपने तन मन धन को ऐसे समजे रहना कि जैसे राजा की कोई चीज़ कोई खिदमतगार (सेवा करने वाले) सेवक ने ली हो...

और जिस पल उस चीज के लिए राजा का हुक्म हो, उसी पल तुरंत ही उस चीज को हाजिर करना है |

ऐसे ही जिस पल माशूक का हुक्म होवे उसी पल तन मन धन को हाजिर करना...

और अपने तन मन धन को माशूक के चरणों में निछावर करना...

और अपनी आतम के अंदर संकल्प करना...

और जैसे मोल (कीमत) लेकर कोई दासी डरते हुए हुक्म बजाती है ऐसे तुरंत हुक्म बजाना |

(नौकरानी जैसे दौड़ दौड़ कर तुरंत ही हुक्म बजाती है वैसे हमें भी तुरंत ही दौड़ दौड़ कर माशूक के हुक्म का पालन करना है...)

और माशूक की नज़र की तरफ हेरत रहना | (डरते रहना)

. ❤️ छठा हरफ ❤️

और हो सोहागिन...! छठा हरफ विश्वास यकीन का है कि तुमको हादी के वचनों पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए |

जो कुछ भी हादी मुझसे कहते है वही सत्य है और ब्रह्मांड जो कहता है वह जूठ है |

ब्रह्मांड का सत्य जूठ है और मेरे हादी का जूठ सत्य है |

और हे सोहागिन...! जो तुमसे तुम्हारा माशूक दिन को रात बताए तो तुमको उस दिन को रात ही देखना चाहिए |

हे सोहागिन...! इसी का नाम यकीन ईमान है |

कसम है मुझको अल्लाह की और रसूल अल्लाह की जो सतगुरु में और पूर्णब्रह्म में एक ज़र्रे भर का भी फर्क़ हे और मुरीद में और फर्क़ है ईमान आकीन देखने पहेचान आउन उसकी में |

और नहीं तो जैसा कुछ नहीं...

तो जैसा कुछ हादी ने फुरमाया है, उसपर जो तुमको ईमान यकीन आए कि वह सत्य है, सत्य है, सत्य है...

[यहां पर तीन व्यक्ति की बात है
अल्लाह रसूल अल्लाह

सतगुरू और
मुरीद

अल्लाह रसूल अल्लाह वो एक है
ऐसे ही सतगुरु और पूर्णब्रह्म एक है..

यह दोनों में कोई फर्क नहीं है
फर्क है तो इस मुरीद में
मुरीद याने शिष्य/चेला
वो उन्हें पेहेचान नहीं सकता इसीलिए उसमें फर्क है

उसके देखने के नजरिये में फर्क है।
उसकी सोच में उसकी पेहेचान कर पाने की क्षमता में फर्क है।

वरना तो जो जैसा है
जैसा फरमाया गया है
वैसे में ही वह यकीन ईमान ल्याए
तो वह सत्य है सत्य है सत्य है।]

तो तुमको यहीं इसी जन्म में पूर्ण ब्रह्म के दर्शन होंगे...

और जो सुख मरने के बाद मिलता है वही सुख बिना मेहनत किए जिवते ही मिल जाएगा...

और जिस अर्श में करोड़ों बरस में भी कोई नहीं पहुंच सका उस अर्श में तुम एक पल में ही दाखिल हो जाओगे |

इसलिए हे सोहागिन...! तुम हादी के वचनों पर यकीन लाओ...

और बाकी सब बातें दिल में भूला दो |

. ❤️ सातमा हरफ ❤️

और सातमा हरफ यह है कि रात दिन पतिव्रता जैसी सेवा और जारवंती जैसा स्नेह अचल अखंड रखना चाहिए |

सिवाय एक के अलावा दूसरे को स्वप्न में या जाग्रत में नहीं जानना चाहिए |

(याने जाग्रत में तो एक को ही देखे लेकिन स्वप्न में भी उस एक के अलावा और किसी को ना देखे, जाने)

आगे पीछे ऊपर नीचे मन वचन कर्म से एक को ही जाने और एक को ही माने |

एक ही को देखे और एक ही को लेखे (जाने) |

उसके समान पतिव्रता को और कोई भी सुंदर प्यारो मीठो लाडीलो सर्वोपर सकल गुण निधान नज़र नहीं आए...

और उसके सिवाय और कोई भी उसके मन को न भावे |

पतिव्रता स्वप्न में हो कि जाग्रत तीनों लोक में कोई सुंदर से सुंदर हो, गुणवान हो, बड़ा हो या छोटा हो लेकिन उसके लिए पतिव्रता का मन भूल से भी नहीं डगमगना चाहिए |

पतिव्रता को मारे तो भी वही एक और पाले तो भी वही एक |

सुख देवे तो भी वही एक |

जो वो बनाए वह बनना कबूल है लेकिन उसके सिवाय और किसी से बने तो उस बनने पर धूल है...

और पतिव्रता को वह बनना कबूल नहीं है |

और अपने पति को साक्षात पूर्ण ब्रह्म जानकर निर्भय बिना डरे बेशक होती है |

छल कपट दोनों दुविधा को त्याग कर तन मन धन निछावर करके रात दिन निरंतर प्रेम से सेवा करती है...

और जारवंती जैसे स्नेह रखती है...

रात दिन दीदार और मिलाप की तक ढूंढते रहती है...

और उसके लिए अपने अनेक उपाय करती है लेकिन कोई भी छल नहीं करती है...

और बिना दीदार के और बिना मिलाप के नहीं रहती है...

माशूक के मिलाप के वास्ते तन मन धन को धूल की तरह उड़ा देती है...

और रात दिन दिल में उनके मिलाप का ही संकल्प विकल्प रखती है...

और रात दिन माशूक की मूरत को ही दिल में बसाए रखती है , ध्यान करती है...

और रात दिन माशूक के आगे पीछे अनेक गुणगान गाया करती है |

. ❤️ आठमा हरफ ❤️

और आठमा हरफ (माशूक की राह पर) गरीबी, (विवेकशील, विनयी) क़ुरबानी (समर्पण), दीन, अधीन, पराधीन होना है और बिक जाना है और कदम और दरवाजा (दिल) हादी माशूक का पकड़ना है |

जैसे हारिल लकड़ी पकड़ता है (हारिल एक पक्षी है जो अपने मुख में तिनका ऐसे पकड़ता है कि उसके मुख से वह तिनका नहीं छूटता)

और जैसे मरकट मूठ को पकड़ता है (जैसे बंदर की अपनी मुट्ठी में जो पकड़ता है उसे कस से पकड़ता है)

और जैसे चिंटा चुंबक पकड़ता है |शीश को हानि सहता है, परंतु मुख की चुंबक नहीं छोड़ता है |

[चिंटा जब अपने मुख से किसी को काटता (चुंबक) है तो उस चिंटे के शिर पर मारो तो भी उस मार को वह सह लेता है लेकिन वह चुंबक (मुख से पकड़ा हुआ) नहीं छोड़ता है]

हे सोहागिन...! जैसे किसी मालिक ने एक गुलाम को मोल (कीमत) देकर खरीदा है...

और वह गुलाम आंखो से अंधा और पैरों से लंगड़ा है |

और उस मालिक के अलावा उस गुलाम के लिए और कोई ठिकाना नहीं है |

उसका मालिक उसके साथ चाहे वो करे |

चाहे उसे मारे, चाहे उसे पाले, चाहे उसे मान दे, चाहे उसका अपमान करे...

लेकिन उस मालिक के अलावा उसके लिए और कोई स्थान नहीं, कोई ठिकाना नहीं...

इसी तरह आशिक का अपने हादी माशूक के अलावा और कोई ठिकाना नहीं है |

अपना माशूक चाहे हमे मारे, चाहे हमे पाले, चाहे सुख देवे, चाहे दुख देवे...

परंतु उसके सिवाय जाग्रत में और सपने में भी और कुछ नहीं जानना चाहिए...

और रात दिन उनके चरणों का ध्यान करे और उनकी चरणरज बनी रहे...

और कभी भूल से भी जाग्रत में और सपने में अभिमान न करे, किसीकी बराबरी न करे, अहंकार ना करे...

और जब भी बोले तो खुद की निंदा और माशूक की स्तुति करे, प्रसंशा करे, उनका ही गुणगान करे |

अपने गुण को अवगुण कर बताए और माशूक के अवगुण को गुण कर बताए |

और अपनी अच्छाई को बुराई कर बताए और माशूक की बुराई को अच्छाई कर दिखाए |

और जैसे कोई नौकरानी बादशाह से कीमत लेकर भी डर डर के उनकी सेवा करती है और छोटी बड़ी सभी सेवा वो डर डर के करती है...

ऐसे अपने माशूक की सभी सेवा नौकरानी की तरह करनी चाहिए |

अपनी बुजरकी, अपने लोक वेद कुल की बड़ाई
(अपने स्थान, धर्म और खानदान की बड़ाई)

और जगत की ऊंचाई गुरुआई मान बड़ाई
(दुनियां में अपना मोटापना, अपना ज्ञान, मान बड़ाई)

इन सभी को अपने माशूक से अलग रखे |

अपने माशूक के सामने खुद को महानीच और नापाक कर देखे...

और अपने माशूक को सर्वोपर, सर्वोत्तम, सर्वधिक, पाक, पावन, पवित्र लेखे, जाने, माने...

और कदी तुम चाल गत मत (याने किसी व्यवहार में हो, चाल, चलन में हो) तब तुम्हारे मुख से जो भी वाणी वचन निकले तब कोई भी शब्द अहंकार का न निकले |

जब भी मुख से जो भी वचन बोले वह गरीबी से, विनयी से और समर्पण भाव को लेकर ही बोले...

और कभी भी अपने विचारों से तन मन धन जीव से और वाणी वचन से (बोली से) (कोल फेल हाल से) किसी का भी दिल ना दुखे |

अपने दुख दर्द के समान सभी का दुख दर्द जाने, माने |

. ❤️ नवमा हरफ ❤️

नवमा हरफ निर्भेद का है |
याने सतगुरु और पूर्णब्रह्म में कोई भेद नहीं जानना चाहिए |

सतगुरु और पूर्णब्रह्म को एक ही सरूप कर देखे |

उन्हें मन वचन और कर्म से मन चित बुध आतम में, रोम रोम में निश्चित करके बेशक बेसुभे होकर धाम के धनी ही जाने |

और अपने रोम रोम में निश्चय करके, विश्वास लाकर निष्कपट सत्य ईमान से पति माशूक का, दूल्हे का दावा देना है...

और माशूक दूल्हे का भाव लाकर दुल्हिन का कर्तव्य (करनी) करे और दुल्हिन की ही चहेन चरित्र (रेहनी) बरते |

तो हे सोहागिन...! मैं तुम्हें अति झीणी मकरी के तार से भी बारीक ख़बर कहता हूं...

और तुम भी उसे सत्य ईमान के साथ दिल के कानों से सुनो कि सतगुरु निश्चय पूर्णब्रह्म नहीं है |

इनका तन भी दुनियां के तन जैसा ही है...

और इनकी आतम पूर्णब्रह्म की निज दुल्हिन है |

और वह बारह हजार सखियों में दाखिल है...

परंतु इनकी रूह के ऊपर पूरन पारब्रह्म का जोश आवेश और खासल खास हुक्म विराजमान है |

और पूरन पारब्रह्म ने अपने शब्दों में कई कोटि विध से (कई प्रकार से) रोशन (जाहेर) कर दिया है कि इस मृत्यु लोक में पूरन सतगुरु का जो स्वरूप है वह मेरा ही स्वरूप है...

और वही मेरा माशूक है...

और मुजे मिलने का पूरन दरवाजा है...

और इस माया में इस स्वरूप को बिना मिले मैं ना पहले किसी को मिला था, ना अभी मिल रहा हूं और नाहीं आगे मिलूंगा |

और हे सोहागिन...! सतगुरु साहेब का जो सरूप है वह निश्चय ही साक्षात पूरन पारब्रह्म यह नहीं है...

यह तो जैसे बारह हजार मोमिन के ही स्वरूप है...

परंतु एक प्रकार से देखे तो इनको सब प्रकार की बुजरकी बड़ाई पहुंचती है कि इनके आतम दिल में पूरन पारब्रह्म साक्षात विराजे है...

और पूरन पारब्रह्म ने कई करोड़ों जुबान से जाहेर रोशन कर दिया है कि इस माया में जो सतगुरु का सरूप है वह साक्षात मेरा प्रतिबिंब है |

जिसको मेरे सरूप की ज़र्रे ज़र्रे की हकीकत के भेद रहश्य देखने है तो सतगुरु के सरूप में देख लेवे |

जैसे जल के घडे में सूरज का प्रतिबिंब पड़ता है...

उस सूरज के प्रतिबिंब के अंदर असल सूरज की ज़र्रे ज़र्रे की (सारी) हकीकत पाई जाती है |

(जल का घडा सतगुरु का तन है
उसके अंदर का जल उनका दिल है
उस जल रूपी दिल में सूरज के प्रतिबिंब रूपी पूरन पारब्रह्म के सरूप का प्रतिबिंब है)

और हे सोहागिन...! सतगुरु के सरूप में पूरन पारब्रह्म का जो प्रतिबिंब है वह ऐसा है जैसे पत्थर के अंदर आग बसती है और लकड़ी के अंदर आग रहती है |

मुर्ख अज्ञानी के लिए यह लकड़ी और पत्थर है लेकिन जो कोई चतुर चालाक है वह इन लकड़ी और पत्थर में से आग निकाल लेता है और अपना कार्य सिद्ध करता है |

अभेदी क्रूर अज्ञानी की नज़र जो दुनिया की है उसके लिए सतगुरु का सरूप मात्र तन है...

(दुनियां वालों की नज़र सतगुरु के तन को भेद कर अंदर बैठे पारब्रह्म के प्रतिबिंब को नहीं देख पाती)

और चतुर सुजान भेदीयों को वही सरूप में साक्षात पूरन ब्रह्म दिखते है |

(भेदीयों याने जो तन के पर्दे को भेद कर अंदर बैठे सरूप को देख लेते है)

जो कोई चतुर सुजान आशिक भेदी है और निष्कपट पूरन भावी है उसकी द्रष्टि में अष्ट प्रहर चौसठ घड़ी पूरन ब्रह्म की लीला होती है...

अर्श की सब प्रकार की सारी लीला उसे अपनी द्रष्टि में दिखाई देती है...

और क्षण क्षण पल पल धाम का जो सुख है वह यहां खेल में लेती है |

और हो वचिक्षण (चतुर सुजान)...! हादी का जो सरूप है वह दूरबीन के जैसा है |

जो चीज हमारी नज़र से दूर से दूर दिखाई देती है वह उनकी निज कृपा से नजीक से अति नजीक दिखाई देती है |

और हादी का सरूप जैसे दूरबीन का है जिससे आशिक को उसमे अनंत कोटि तमाशे (अर्श की लीला) मीठी दिखाई देती है जबकि अभेदी, दुनियां को हादी का सरूप जैसे दूरबीन की बजाए आरसी (कांच) दिखाई देती है |

और हादी का जो सरूप है जैसे आरसी और जैसे चंद्र मन का है...

अनंत कोटि उपाय से सूरज की अग्नि नहीं उतरती है वह अग्नि आरसी का जोग (संयोग, मिलाप) पाकर तुरंत ही उतर जाती है...

वैसे ही चंद्र मन का जोग पाकर चंद्रमा की शीतल चांदनी (अमृत) उतरती है...

इसी विधि से, रीत से जो शिष्य ने पूरन भाव से और सम्पूर्ण इश्क लेके हादी माशूक का चितवन किया तो तुरंत ही आशिक के दिल में पूरन ब्रह्मरूपी अग्नि प्रकट (प्रज्वलित) हो जाती है...

और उसके दिल में पूरन ब्रह्म रूपी माशूक रोशन हो जाते है |

और हो सोहागिन...! जब संपूर्ण रूहें परमधाम में जाग्रत होगी तब श्री राजजी अपने कर्तव्य (फर्ज) का इंसाफ़ (न्याय) करेंगे...

माया में जितना कर्तव्य तुमने सतगुरु के साथ किया है उतना कर्तव्य राजजी तुम्हारे अपने तरफ लगाएंगे...

(याने माया में जितनी सेवा सतगुरु के सरूप की हमने की है, हमने कितना उन्हें याद किया है उतनी सेवा हमारी तरफ रखेंगे)

और कहेंगे तुमने उस माया में मुजसे ऐसा किया है...

और माया में जितना कर्तव्य सतगुरु के सरूप ने तुम्हारे साथ किया है तो उतना कर्तव्य राजजी हमारी तरफ लगावेंगे (करेंगे)...

और कहेंगे कि उस माया में मैंने तुम्हारे साथ ऐसा किया था...

और तुमने मुजे नहीं पहेचाना |

इसीलिए हे सोहागिन...! इतने में ही अनंत कोटि (सारी) बातों का मूल समज लो |

इन बातों की कथा पोथी (पुस्तक) नहीं होती...

इन बातों की आदि अनादि से इशारतें ही होती आई है |

इसे सतगुरु की सेन (संकेत, इशारा) कहते है |

जिस सोहागिन ने अपने दूल्हे का सेज सुख लिया है वह अपने दूल्हे के सेज के सुख को ईशारों में ही समज लेती है |

और जो उस घर की और उस सेज की सोहागिन नहीं है उसकी यही पेहेचान है कि उसे इशारत समज में नहीं आती है और नाहीं वो उस इश्क की अधिकारी है |

वह इस पाती को ऐसे सुन लेती है जैसे सुहागिन की पाती कोई रांड सुन लेती है और उस पाती का एक रोम (शब्द) भी नहीं ले पाती |

|| श्री परमहंस महाराज श्री जुगलदासजी की प्रेमपत्री सम्पूर्ण ||

at May 06, 2020

Share

Home

View web version

Powered by Blogger.